8. आवश्यकतानुसार दानेदार कीटनाशी जैसे कारटेप हाइड्रोक्लोराईड 4जी./20 कि.ग्रा./हे. या क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी 2 एमएल/लीटर, एसीफेट 75 एसपी 2 ग्राम/लीटर पानी या क्विनॉलफॉस 25 एसी 2 एम.एल./लीटर, कार्बोफ्यूरान 3जी./25 कि.ग्रा./हे., पानी में मिला कर छिड़काव करें।

जैविक नियंत्रण सामाग्री जैसे फेरोमोनट्रेप तथा ट्राइकोकार्ड के लिए निम्न संस्थानो से सम्पर्क कर सकते हैं।

1. www.pestcontrolindia.com
2. www.nbair.res.in
3. www.niphm.gov.in

प्रस्तुतकर्ता :

पी. मूवेन्थन, अनिल दीक्षित, एम.ए. खान, जी.एल. शर्मा, प्रवीण वर्मा, लोकेश वर्मा, उत्तम सिंह, भीषम कुमार एवं सतीश खाखा।

प्रकाशक :

डॉ. पी. के. घोष
निदेशक एवं कुलपति
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2225333
वेबसाईट – https://nibsm.icar.gov.in/

Publication No. - NIBSM/EF/2021-41

Farmer FIRST

Farmer FIRST Programme
फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम

(Agricultural Extension Division)
(कृषि प्रसार विभाग)
Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

धान में तनाछेदक कीट, जानकारी एवं नियंत्रण

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2225333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2225333
Website : https://nibsm.icar.gov.in/

परिचय:- तनाछेदक कीट विश्वस्तर पर धान का सबसे गंभीर कीट है तथा छत्तीसगढ़ में भी इसका प्रकोप सभी क्षेत्रो में देखा जा सकता है, धान ही इसका मुख्य भोजन है तथा यह धान को 30 प्रतिशत क्षति पहुँचाता है यह कीट फसल को नर्सरी अवस्था से लेकर परिपक्व अवस्था तक हानि पहुँचाता है। इस कीट के इल्ली (लार्वा) फसल के किसी भी अवस्था में तना में घुसकर उसे काट देता है, जिससे पौधे का तना और पत्ती सुखा हुआ दिखाई देता है तथा इससे प्रभावित पौधे की बालियाँ सफेद दिखाई देती है जिसे 'डेडहार्ट' कहते हैं, जिसमें दाने नहीं होते और खींचने पर आसानी से अलग हो जाते है, इस कीट का प्रकोप जुलाई से नवम्बर माह तक देखा जाता है।इस कीट का इल्ली ही धान को नुकसान पहुंचाता है, और ज्यादातर कीट फसल की शुरूवाती अवस्था में पौधे को अपना शिकार बना लेता है।

जीवनचक्र:- तना छेदक के सफल नियंत्रण के लिए इसके जीवन चक्र को समझना अति आवश्यक है जिससे हम समय पर इसकी रोकथाम कर सकें और अपने फसल को सुरक्षित रख सकें। यह कीट अप्रैल से अक्टुबर माह तक सक्रिय रहता है तथा पूर्ण रूप से विकसित इल्ली धान के ठुंठ में नवम्बर से मार्च तक सुप्ता अवस्था में रहता है,तथा मार्च में इसका कोषा अवस्था प्रारंभ होता है और अप्रैल के शुरूवात में इसमें से शलभ (तितली) निकलना प्रांरभ हो जाता है। तदोपरांत शलभ सक्रिय हो जाते हैं तथा समागम (जनन) के पश्चात् पत्ती के निचले भाग में 120-150 अण्डे देती है, जो 2-5 के समुहों में होते हैं तथा

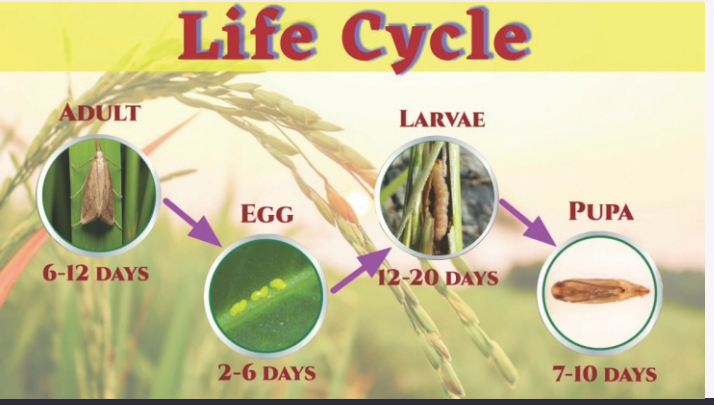

प्रत्येक समुह में 60-100 अण्डे होते हैं जो पीले भूरे रंग के बाल या रूई से ढके होते है।

अण्डे 6-7 दिनों में प्रस्फुटित हो जाता है तथा इनमें से छोटे-छोटे काले सिर वाले इल्ली निकलते है, जो शीघ्र ही पौधे के तने के निचले भाग में छेद बनाकर घुस जाते है और यह 16-27 दिनों तक तना को खाता है, इसके कारण हमें पानी के उपर तने में एक छिद्र दिखाई पड़ता है जिसे देखने पर उसमें इल्ली दिखाई पड़ता है। यह इल्ली 9-12 दिनों में एक शलभ के रूप में विकसित हो जाता है। इस कीट का जीवन चक्र 31-46 दिनों में पूर्ण हो जाती है अत: किसान भाई इसके जीवनचक्र को समझ कर समुचित निगरानी के माध्यम से इस की पहचान एवं उचित नियंत्रण उपाय कर सकते हैं।

प्रबंधन:-

1. फसल के ठुंठों को नष्ट कर दे जिससे उसमें कीट शरण ना ले सके।
2. 2 ग्राम क्लोरोपायरीफॉस दवा प्रति कि.ग्रा. बीज के हिसाब से बीजोपचार करें।
3. निगरानी के लिए फेरोमोन प्रपंच तथा प्रकाश प्रपंच का उपयोग करें जिससे कीट के प्रकोप की स्थिति साफ हो सके।
4. थरहा निकालने के पूर्व कारबोफ्यूरॉन दवा का 2 कि.ग्र./हे. के हिसाब से उपचार करें।
5. रोपाई से पहले थरहा के उपरी भाग को काट कर नष्ट कर दें ताकि कीट के अण्डे पौधे से अलग हो जाये।
6. नत्रजन उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग न करें, नत्रजन का उपयोग लीफ कलर चार्ट के मिलान के आधार पर तथा सिफारिश मात्रा के अनुसार करें।
7. रोपाई के 30 दिन बाद ट्राइकोग्रमा जैपोनिकम 1-1.50 लाख प्रति हेक्टेयर प्रति सप्ताह की दर से 2-6 सप्ताह तक ग्रसित खेत में छोड़ना चाहिए यह कीट तनाछेदक के अण्डे को नष्ट कर देंगे, इसे ट्राइकोकार्ड के रूप में उपयोग कर सकते है।